

मथर

[illegible]

सम्यकसंयुक्तयश्चुक्ता गुणान्यनययश्चुक्ता ॥ मन्त्रास्तु समययावत्कृत्वा स्वाध्यायमिच्छेत् ॥ नृचैयत्यनभजानि, कृत्वा स्नानादिपूज्यं वत्
 यष्ट्याञ्जितदव, पुदयादष्टयष्टिका ॥ पी० मूर्तिर्नवांगना, युक्तास्थादष्टयष्टिका ॥ विधिमन्त्रादिकं कृत्वा, सम्यगाजनमन्दिनावि
 विक्रान्तमयातिष्ठ, विष्णुदम्पाकमानय ॥ ततामृत्युं कथयन्, बोधउक्तनसयथा ॥ अथ संधारु संखस्तु ॥ सिंहाय कं वापिविज्ञासर्व
 याकाग्रमुद्धृत्य, निवायार्थं निवदयत् ॥ नन्याथ वृत्तिकाहामे, विधान्यस्यापकल्पयत् ॥ विशाध्वविधिनावृत्ति, तदङ्गीकादृती ॥ कृत्वा २६
 नार्यग्निनात्रेकं, ततानवकवापून ॥ बद्धिवीजं समादाय, कादिस्तानमतिक्रमात् ॥ निवाग्नित्वमिति आत्वा, वृत्तिकाग्नीनिवलयत्
 ॐ ह्रां नृग्नये नमः ॥ ॐ ह्रां सामाये नमः ॥ ॐ ह्रां सूर्याये नमः ॥ ॐ ह्रां वरुणाय नमः ॥ ॐ ह्रां इंद्राय नमः ॥ ॐ ह्रां सद्यो दवया
 नमः ॥ ॐ ह्रां सद्यो विष्णवे नमः ॥ ॐ ह्रां नृग्नये विष्ट कृत नमः ॥ यं वक्रादिपूज्यं वयं नृ, पृथयत्वा नलक्रमात् ॥ स्नाने होमाकृती
 दत्वा, क्रमयित्वा विमर्जयत् ॥ ततः ॐ धर्माये नमः ॥ वृत्त्या दक्रिहा वाहो ॥ ॐ ह्रां नृधर्माये नमः ॥ नृ निवा मवाहो ॥ ॐ स न सय निवः

[illegible]

सिद्धनाथतदले॥ जानुमधकनाभानि वद्धवीनासनाधवा॥ नभेवामकन॥ पातु, पूर्ववन्मन्त्रितोदन॥ उदय्येऽतिरक्ता रुतिम
 कृतपावका नृनपविगुमस्तीया, सूर्ययुक्तयुतयुत॥ नृपासा नननादाय, पाथी॥ प्रतावन्विता॥ स्वाका ननाद्रुकी॥ पश्चदत्वादि
 पादलानली॥ ॥ तद्यथा॥ ॥ नागकूर्मककन, दवदरुधनं रुयय॥ ॐ यथा एवायु र्य॥ स्वाकृत्वा पासुनजलनरुकादिकनि
 वद्यतापजती ॐ नृमृतायसुनतासमीत्यननमरुतायस्य॥ ॐ पातयस्वाहा॥ ॐ नृधनायस्वाहा॥ ॐ समानायस्वाहा॥ ॐ उ १०
 दानायस्वाहा॥ ॐ धानायस्वाहा॥ ॐ तिस्रास्तुतिदत्ताविधिना उक्ता॥ ॐ नृमृतापिधमसीतिमरुतायस्यकृतिगदरुनायुलक
 मृहीत्वा नृवमदिति॥ ग्रामे॥ पविमितीरागतायनयूनयता॥ पातमवातधयासमुदनस्यनयूनयता॥ कवकर्मधुसिगु
 क, पनाद्युनसनामिषी॥ गृह्णनरुदरुदरुय, प्रवामपिबर्जयता॥ नृवदीतपुत्रु अनालवनननवाद्युती॥ दधुपिधनमीकृद्य
 कालनरुदरुनयुता॥ नान्मयद्रुपिवद्धानिषा, पकाल्यनवातनापकृतिगवापिषा॥ नविष्ठाविगवकुनवादीनान्यवगस्यामकि

कान्तवकसदि, दूर्यत्वात्पादना॥ नयकातिगदरुन उक्तीतपुत्रुसमना॥ नृरियथावदावम्या गुष्ठपादस्यदकि॥ सासश्चद
 क्रितामुदिष्ठा, ग्रामगासुमा॥ पूर्ववत्सकनीकृत्वा, उक्तायागनिवर्जयता॥ मृडामानातिनासान्, वक्षीयापनिद्याकृत्वा॥ ॥
 ॐ तिस्रान्तिकरिष्ठाजिनविधि॥ ॥ नृनीयायाद्वभानाय, उद्धयायस्यदीपयता॥ लंन्यादिरुमिषयर्न, सारिष्ठायादयाविता॥ प
 ॥ पतिनो गोपिताकाता, नरुनकाकवाक्य॥ धमनिनीमयाहिष्ठासिष्ठा नस्यादतीदन॥ यथा मथाददानापि, रुद्रयुष्यनवाधुतागद
 लाद्युकनीरिष्ठा, मा उदीतिगृहाधिया॥ उता॥ धामवयादया, उकिमृकिरुलादिहि॥ सोनोमाधुकनी॥ उता, सदकाननवर्जयता॥ द
 कीमाधुकनीव नृतिमपिभक्तकृतादपि॥ उकाननुन उक्तीत, वरुस्यतिममायदि॥ उतायस्त्रयनारिष्ठा, यार्थनायुप्रवाधन॥ सध
 रिष्ठा निनाधुका, मधमापनिवर्जयता॥ रिक्तार्थताप्रजलाद, वक्त्रकादिप्ररुर्ग, वृत्तुकाविदिगम्यगु, मूमृका मुखकारिगी॥ विरु
 सिक्कि काल्पि, वरुनूपासिमन्त्रिता॥ ननृगुजयकाव्यप, गुविक्कावगुठिता॥ विष्णुदरुसमनास्नात॥ कोपीनमृकनीयका॥ पविवय

समाचम्य, मोनीयात्वा निर्वगुनं ॥ तथा नास्तीति समादाय, दधुवादा रिमक्तिर्ग ॥ ज्ञातपुण्यकनायाया, रिक्कार्थं सुद्वयस्मत् ॥ तदा प्रा
समनिष्ठीय, स्वसंभू, भाग्नसंयत् ॥ कृतं न च न कृचीत, यज्युः ॥ अदिर्मकृत् ॥ वहुलं नमिद्वयस्मत्, समासाद्य गृहागता ॥ रिक्क
न्दहीतिर्मकृत्य, पथा मुष्टगलावन ॥ तावत्कालं प्रतीकृत, यावत् ॥ शिवत्सया गग ॥ प्रगर्वं मवाध्नाति, ततान्यनुवर्जं मुनिः ॥ व
रुन्नपि समाकृता, नागुक्कृत्य दण्डग ॥ यजमानं न जानीता, रिक्का ननु वचाद नता ॥ नदाद्या न च रुक्म, नकास्याना उतीतता ॥ १७
वृषलीगुर्विनीप्तान, वक्रात्तवक नतन ॥ ततारिक्का मगीतिर्क, पाण्डुरूपवसानिका ॥ लाकोना स रुसासं स, चर्जदाद्य मवात्मनः ॥ रि
क्कायां गुडिस्नान, धृत्वा वम्ययथायना ॥ उद्धृतं सकलीकृत्य, गाध्राक्काकुटादीपयता ॥ यजमानं मगीकृत्य, कुर्याद्भागवती ॥ राग
निवद्यदवाय, गुणवचद्वितीयकं ॥ गगीयं पावनं कार्य, मयजुः श्रीगुर्वचवता ॥ सिद्ध्या नृणां जनस्याय, विधिः पाकः ॥ समासग
॥ लथस्वाभ्याययो ॥ गनं, सन्ध्यामासाद्य पत्त्रिमा ॥ स्नानं सन्ध्या च न कृत्वा, पूजयेत्तामरुद्वयं ॥ द्विगुं च रूतलेगुं च, गृहाकुम्भं च गत्व ॥

सादृलं कर्म कर्त्तव्यं, पुत्रीयापनीप्तविलता ॥ कृतमनुगतं मन्त्री, ददंशानुरु मर्त्तिर्न ॥ विनयनं कनात्मानं, जयीतया गतिदया ॥ त
तादिवापनीतन, वक्रयूतनवानिमा ॥ सन्ध्या निवाञ्चनं कुर्यात् ॥ निष्ठापि यथायथा ॥ यनः ॥ सन्ध्या समुत्थाय, पाहः ॥ सञ्चिन्त्य न क
यथादिष्टं क्रियाकालु, सर्वे प्रत्यक्षमाचनता ॥ यथायका नहीतने, सीमतां सामर्ग्यं कृता ॥ क्रियाकालु कर्मावस्था, कृतानि विविधः क्रमः
॥ ॥ ॥ ॥ सर्वे पूजा विधिश्चिद, मृगतायपविर्गक ॥ कर्त्तव्यमक्तितामन्त्री, सिद्धिर्जसमवाध्नाया ॥ ज्ञायाद्यादि वहुद्वयं, म
थवाग्नवत्सरादया ॥ मितामितास कर्त्तव्यं, वहुद्वयं नमी सता ॥ उत मृगिमासम, गृहमन्ध्याधमममा ॥ नशापविर्गमुद्दिष्टं मन्म
दायकालक ॥ ज्ञायाद्यादि तयश्च, मयजुवजनाद नपवर्क विदधीतुव, गृहगोमनियममन्त्रि ॥ प्रत्यक्षं निविधयत्वा, नायनियवि
विमता ॥ यविर्ग कालनेयत्वा, पायविर्ग मिदं नहि ॥ तस्मान्निगु कालने, मिहिकमिदं सता ॥ विद्या प्रहानयूयादि, रूतमस्या पगीयतामा
रुचूला रुतस्मादि, ददवदनिवागमा तस्मान्निमिहिकन्नाम, यविर्गकमिति कृट ॥ निर्युनिनयपूजाया, मयजुष्यकृतादिहि ॥ यवि

उमयकालपि, पत्यरुपयिकल्पयतावद्विबुद्धाधिकारस्य, नागर्कदाकभूतिना॥ दृग्मयमन्त्राविन्द, समुसरुखवाडुजीन
 मीमासचेदवानां, विष्णुतद्यमविगुर्क। पतिपदसमात्रस्य, यावत्पश्यदशीक्रमात्॥ शोवत्केनाजुर्गतामर्क, तादिष्टयथक्रमीक
 लोकायामरुन्वापि, यथातकिपाविगुर्क॥ कर्कितद्विजकन्यासि, दिगुर्गदीमुदीकती॥ क्षीर्गुक्कगुरुसूरु, मन्यदयूपयुक्तताय
 द्रवल्कलयस्तार्गैर्कुरुक्तामदरुसनारुवा। मरुक्षदिमर्कममूर्ग, पविगायपसन्धता॥ पतिनावन्दमावन्देद्वि, वक्राना। मगुहानवि
 सदाक्षसचेदवाय, कमसनवर्गदुष्। लक्ष्मणनगर्गनेर्क, मृगात्तस्यात्यविगुर्क॥ २२॥ जीतिनदद्वेनविगत्यावासफथा। ३
 काशीत्ययवापुर्ग, निरिनावायुयकया। पश्यसगत्तर्गवाकर्कवा, उत्यगुक्काडुलालक॥ द्वादशाकुलमानानि, आभदक्षामुता
 निवा। सिद्धविष्णुनमानानिवरुनहुलकानिवा। नाथवपिष्टिकास्य। न, वदुर्थसचेदवत॥ गङ्गावगतलककार्य, पविगुमगिस
 न्ननशा। क्षीर्गसूरुमगांन, गच्छितैर्गुक्ककनता॥ मधितम्वरुत्रयस, वक्रमन्त्रानक्रयत्॥ यक्रवन्दनकासीन, कस्मीनकमु

नीचन्दलावना। रुनिडा। मत्रिका। त्वेषा, नक्रुदन्यगुमनता॥ गन्ध्यादलकर्कवा, लथवागैरुसन्धया॥ लक्ष्मवायथा। मरुमकद्विव
 कुलहुला। पद्विगि॥ यानूथीविनावदुधी। रुयनाजिता॥ रुयाच्याविजयावली, लूजितार्थेग्यामिवा॥ मनाच्यनीतग॥ प्राका, दस
 भीष्टुंवेसचेतामूखी॥ लूधिकाययथा। मरु, कर्कवागुन्कयसमा॥ पल्लगुक्कलिलवान, वलनारुखयडुवि। याथादिगीयविगता
 भर्ककाययथागुवि। वरुसपविर्वकीना, गिववत्सगुसम्यदि। तन्माथेककमतर्था, विदधीगयविगुर्क। निरुमूळीगत्तधी। ग
 नाना। मृयुसक। म्यादककैगयादान, दिक्कालकलमादिश्र॥ रुक्मादिनवरुकाडु, लिङ्गस्यो नोयविगुर्क॥ लूखाविगतिगावृद्ध
 दशरुि॥ दशरुि॥ क्रमात्। द्यमुलायकनासुगु क्रमादकाहुनारुना॥ गुन्कयामानमध्या, लिङ्गविष्णुनसस्मिग॥ सफ्मयावागुः
 यादस्या, कृगनित्यक्रिय॥ गुवि॥ रुषयत्यमवक्राथ॥ सायाक्रयागमद्विन॥ कृत्वा नोमिहिकैसन्धा, वि। गषसवतर्प्यती॥ पति
 गृहीतरुसाग, मृतिगसूरुयमच्चयत्॥ लानम्यसवतीकृत्य, पतिवाद्यकनाहुन॥ द्वावात्यक्रसम्यार्थ, पूजादिकमतार्थयत्

ॐ सात्त्विकनाद्यानाथनमः॥ ॐ तियूचे ॐ विद्याकलायनमः॥ ॐ त्रिदक्रिः॥ ॐ निवृत्तिकलाद्यानाथनमः॥ ॐ तियन्विमा ॐ प्रति
 हाकलाद्यानाथनमः॥ ॐ लृकन ॥ ताथेवगद्वाखाया॥ ॐ हानदिननमः॥ ॐ हामकाकाताथनमः॥ ॐ हानदिननमः॥ ॐ हाविना
 यकाथनमः॥ ॐ हादवायनमः॥ ॐ हास्कदाथनमः॥ ॐ हादवायनमः॥ ॐ हावपुयनमः॥ ॐ तियुतिदात्रदोयूजयता॥ नित्यवदा
 नपातादि नस्यविविधनाकन ॥ प्रविशययन्विमदान् वासुनाथश्च पूजयता ॥ ह तनुद्विविः ॥ यद्यस्व नप्राकृतदिको विधाय २०
 यरु समान् पूजयन्विमदान् दुरुद्वोक्तं ४ पृथ्वा चन्दननदयानरिगालिवरुसंविधायरु स्वसि नस्यविनाययतमि
 भारुमादिसचक्रा ममयरु प्रवाधता ॥ लृकथे हावयदव कानखरु कनारु ॥ नमतेरु समासाय प्रक्रियददयानन ॥ लृयोः
 मृपश्च गवाश्च समकृतस्वमलु पावडुस्यथरु मस्काय वीरुस्ये ४ स संस्कारे विक्रियविक्किनारु कृ कृश्चोपमद
 प्रताहीनीलदिगिवद्ध्या लासनाया प्रकल्पयता ॥ नमते वासु निर्वीमा दानलक्की सपूजयता पन्थिमारि मुखरु र्म् सचीकन्या

यस्मिन्नेषावगवमानुरा सिद्धकावद्धनी नगः॥ कुरुक्षेत्रसिवावद्धन्या मरु समन्वयता ॥ दिक्कादिदिकारान् विष्णुवक्त्रा
 वसतिकान् वावद्धनी सप्रगदाय द्युपृ कान् गमिनी ॥ निवाक्का प्रवयन्मन्त्री पूजोदीभक्त गतनी ॥ लृविक्किनयथाधना मूलम
 रुमदी नयता ॥ समकृतमयदना नकार्थे लृकथे नृपिणी ॥ पूजकलसमाभाय गस्तान् गस्त वामतः॥ समस्ताननककुरु यजे
 दक्षिणासनशावद्धन्या प्रसवस्काया भायद्धनदनुद्धया ॥ रुगलिङ्ग समादायो विदक्कालिङ्ग मृदया ॥ कुरु निवयवाधसि मूलम
 रुयकथा ॥ रुद्धनी नवद्धन्या नकाविक्का पथदधो ॥ गालीवायुदिग्गाग पूजयित्वा वडुर्ज्जा पद्मिनी पणमकारि मायू द्विवि
 द्युवानर्त्ता ॥ पश्चमकुदिरिदव स्तापयत्वा विधनतः॥ यजुत्वावायवानर्त्ता पूजोक्ता विधिनावधः॥ कत्वाकृदुदिमस्काया नत्ययः
 निवयावकान् विधिवच्च नृकं कत्वा समामाहूतिः ॥ ध्वान्या नमविशदन् दुव्यातविशुक्तिविः॥ दत्वासा गेनिवागिनी स
 नक्रुसागमात्मन ॥ दयसकी नवृकान् द्वादशाहुलमायनी ननवमसवापि पूजयेतादनुधायन ॥ दक्रिः ॥ रुमदागवा नृपि

नासिखयाथवा॥ मृदिकायन्विमदया, सथाज्ञातनवाहना॥ इह नदवदवम्, दयादामलकीरुती॥ रुलश्च वामदवन, निनभाव
पयावनी॥ उलान्यामीसमकुल, मूलमकुलवाहल॥ सगन्धपश्चगवश्च, पलासपुष्टिमस्तिता॥ उलान्याकू समदया॥ गन्यासिनावनी॥
नृगनृनेमतामया, वायव्यश्च उरु॥ सम॥ रुमदयासिमवालि, सथाज्ञात॥ कू॥ लसद॥ दधु॥ कू॥ सु॥ गकापीन, रिकायागालि नृः
पिला॥ ककूलकू कू मंतल, गलाका॥ लोके॥ लधन॥ तान्दूलदप्यलदप्यलदया, इह ननाचनादपि॥ नृ॥ सनभ्यादकपागु, थाग
पटागुकेपगुकी॥ उलान्यामीसमकुल, दयादीननरुदया॥ पू॥ च॥ म्या॥ च॥ नृ॥ क॥ सा॥ र्क॥, मानगन्धादिकं नन॥ पदसंपन्नमतर्था, मनर्म
तत्पुक्त्यथ॥ पविगालिसमादाय, पाकगान्यदवातिस्त्वा॥ सहितामकुपूगानि, नीत्वापावकमानिधि॥ ककू॥ जिना॥ दि॥ ल॥ क्का॥ य॥ सः
सम्वनात्मकी॥ सा॥ क्रि॥ ली॥ स॥ च॥ क॥ ला॥ ना॥, ग॥ म्फा॥ न॥ लि॥ व॥ म॥ य॥ य॥॥ स्वगिरुतिदिप्रयागन, मकुपूदितयायून॥ ल॥ ध॥ य॥ त॥ प॥ वि॥ ग॥ लि॥ वा॥ ना॥
नामकविंशति॥ योगधामवृषस्कान्, प्रामादानलनसयान्॥ कानकोपश्च सु॥ गु॥ ल॥, वर्मलपनिवदयगु॥ पू॥ जि॥ ना॥ या॥ थ॥ सु॥ यो॥ य॥, द

21

स्वागन्धपविगुकी॥ पलियलसमावम्, कगन्यास॥ क॥ गार्थक॥ न॥ य॥ दि॥ दालपातथा, दत्वागन्धपविगुकी॥ पविष्टवास्तुनाथीय, वक्रा॥ ल
पिददीतया॥ ल॥ म्फा॥ ला॥ क॥ पा॥ ले॥ य॥॥ पविगालिस्वनामरि॥ निवकू॥ म्फा॥ य॥ व॥ द॥ न्ये॥, दयालभादनायवा॥ विष्टुनायकमय्यच, गु॥ नृ॥ पा॥ दाः
मृजतना॥ ला॥ त्मान॥ च॥ पविगुल॥ गन्धपू॥ च॥ स॥ रु॥ य॥ य॥॥ ल॥ थ॥ स॥ च॥ म॥ धी॥ लि॥ य॥, मानामनविवर्जयगु॥ धूपिगेपू॥ य॥ इ॥ च॥ य॥, मक॥ म्फा॥ य॥ वि
गु॥ लु॥ की॥ च॥ उ॥ च॥ गे॥ रु॥ लो॥ या॥ य॥, मामकुलपविगुकी॥ दि॥ क्षे॥ पा॥ ऊ॥ लि॥ म॥ ध॥ म्फा॥, मामकुलपदया॥ ०॥ गु॥॥ त॥ य॥ य॥॥ समस्त॥ वि॥ धि॥ वि॥ च्छि॥ द॥, पू॥ न॥ ली॥ स
मखंपुति॥ पुरुवामकुथानित्वा, खटिक्कायाफिका नक॥ तन्निदिमवज्ञानी॥ दि॥ य॥ र्ग॥ य॥ वि॥ च्छि॥ ल॥ गु॥॥ स॥ च॥ य॥ स॥ च॥ दा॥ र्ग॥ रा॥, नमस्तुमुपसी
दमा॥ ल॥ थ॥ वा॥ ल॥ म॥ क्रि॥ ना॥ यी॥ द॥ व॥ ल॥, ल॥ रु॥ द॥ व्या॥ ग॥ ल॥ ध॥ व॥ ने॥॥ मकुपूलाकपाले॥ य॥, सहित॥ य॥ नि॥ वा॥ न॥ क॥॥ नि॥ व॥ य॥ या॥ म्फा॥ रु॥ नृ॥ य॥, पुरा॥ त॥ थ॥ य॥ वि
गु॥ की॥ नि॥ य॥ म॥ च॥ क॥ नि॥ म्या॥ मि॥, उ॥ म॥ भा॥ द॥ न॥ वा॥ रु॥ या॥॥॥ ल॥ व॥ द॥ व॥ मा॥ म॥ कु॥, न॥ व॥ क॥ ना॥ मृ॥ ती॥ क॥ र्ग॥॥ लि॥ वा॥ नृ॥ मूल॥ मृ॥ वा॥ य॥, ग॥ द्धि॥ वा॥ य॥ नि॥ व॥ द॥ य॥ ग॥ य॥
रु॥ र्ग॥ पु॥ ल॥ म॥ च॥, क॥ त्वा॥ ग॥ उ॥ रु॥ मा॥ य॥॥॥ रु॥ त्वा॥ व॥ ला॥ सु॥ ती॥ या॥ र्ग॥, उ॥ द॥ ती॥ त॥ लि॥ वा॥ न॥ य॥॥ त॥ ग॥॥ उ॥॥ पू॥ च॥ दि॥ ग्वा॥ सि॥ था॥ दि॥ गी॥ म॥ रु॥ रु॥ ग॥ ल॥ नृ॥ द॥ क

गुयालादिस्त्राहा॥ॐतिदिग्गमरुदन, सर्वदिक्कवहिवेलिदयादय उवायथांरु गुयालवलिंरुगु॥समानम्यविधिच्छिदुयू
 नकंराममादनाग॥यूक्तेचाहुतिरामश्च, कृत्वापुत्रीगयावकं॥ततःॐरुनाग्नस्त्राहा॥ॐरुशामायस्त्राहा॥ॐरुग्निसामाय
 स्त्राहा॥ॐरुग्नयस्त्रिष्टकयस्त्राहा॥ॐरुग्नितिवउष्टयदयाग॥वहूकृष्टुवितन्दय, मधुलायवितलिवा।नाडीसत्त्वाननूपन
 विधिनाथाऊयतग॥यूतवंगदिऊयाग, विन्यस्यामुमकंकटी।द्वयश्च गतःॐग, पविगान्यधनाययग॥कलाहिवायउ।अन
 मनुवाकृतायश्चकशा।नयवामूलमकु।पविगान्यरिमकुयग॥ॐरुवसंयूटीकय, पितृध्वादन्यधामुना॥संवष्टवमेषासु॥४
 यूकयत्वाहु उचने।नकाधरुगदीशय, रुक्मिनमुसमगयग॥यूक्तिगयसधूयायः॥दत्तासिद्धान्यसूक्त।गुनायादानिकंगत्वा
 रुक्मादयापविगुका॥निर्गल्ययनवाचम्य, गमयमलुतगय।पश्चगयश्चयूदत, धवनश्चकमारुवा।नावाकामकुसन्नदाहु
 तसंगातगाग॥स्वधदनम्यननीग, उवूकदरुसंमया॥नृ।हनेवयुका।नत, मूमरुनपिसंवि।हनाकवलरुससयाया, सा

22

मवासममाहित॥ ॥ॐतिपविगुकाधिवासनविनि॥ ॥नयपातःसमूक्ताय, कृगभ्ना।नस्यमाहितः॥कृत्वासंश्चाञ्चनामकी
 पविश्यमुखलुय।समादायपविगानि, नृविसक्तिगदवत॥उभन्या।राऊनसुद्ध, स्काययत्कृतमलुत॥कताविष्टकदवर्ग, निमात्य
 मयगीनीयय।यूचवतु।रुतलेगुद्ध, कृत्वा।निराद्रिकदय।नादित्यदातादिकाल, कुरुक्ता।नितिवनत॥निमित्तिकीसविष्कातु
 यो।यूजावि।भग॥मन्त्रा।गय।पीयाथ, न्विकृताम।नालुना॥नृक्षारुनगर्तकृत्वा, दयात्पुक्कृतिगने।पविगुशतवदत्वा, सर्वव
 म्यददीत॥दातयालादिकाल, कुरुवर्द्धनिकामय॥संनिधाननग॥संगानृपविश्यनिगाधन।पविगुमातनदया, गलमयगुनपंकथ
 ।पविगुकमथदाय, किञ्चित्कलमसमूर्य॥सनत्कालात्मकैदव, यक्रयादिति।सकृथा॥ॐकालात्मनात्वयादव, यदृष्टमामकवि।क्ष
 ।कर्तलि।समूत्सु, धृतगुर्कवमत्कृते॥यदमुलिष्टम, कर्तयष्टमसगुकर्त॥सर्वोत्थनामनासंरा, पविगुलत्रदिक्तया॥ॐयू
 नय॥सखवतनियमवनायस्त्राहा॥नृ।सतनुप्रकृष्टरु, पालनयदयानिना॥मूलमायाकमञ्जय, पविगुलत्रयकिवीविद्यातत्त्व

वविद्यान्तु, विष्णु कान्तयातिता ॥ ॐ ध्वनान्तु समुद्राय, पवित्रमधिनाचय ॥ निवान्तु निवतत्त्वध, नृत्तकान्तु तयातिता ॥ निवान्तु मन्त्रम
 द्वाय, तस्मै धर्मयपवित्रक ॥ सवकान्तु तयालाप सवतत्त्वध सवत ॥ मूलतया न्तु मन्त्राय, दद्यात्तं गवतात्तक ॥ न्नात्तविद्या निवत्रा
 का, मूमृक्ष्णपवित्रक ॥ विनिदिष्टं वृत्तुर्न, निवविद्यात्तु रिः कमात् ॥ स्वाहार्तं वानभातं वा, मन्त्रमवा मदीनथन ॥ न्नात्तय ॥ स
 वेदवाना, विदधीतयपवित्रक ॥ ॐ हं न्नात्ततत्त्वाधिपापनिवाय स्वाहा ॥ ॐ हं विद्यातत्त्वाधिपापनिवाय स्वाहा ॥ ॐ हं निवान्तु त्वा
 धिपापनिवाय स्वाहा ॥ ॐ ति कृमनयपवित्रकं दत्त्वा ॥ ॐ हं सवतत्त्वाधिपापनिवाय स्वाहा ॥ ॐ ति मन्त्र समुद्राय, दत्त्वा सप्तवत
 नक ॥ यस्यान्तु लिपुतात्तु त्वा, उक्ता विष्णु मयत्तु ॥ त्वगत सवतत्त्व गाना, छि तत्त्व वदनाचन ॥ न्नात्त न्नात्त गाना, उक्ता त्व
 यनमन्त्र ॥ तन्मना मनसा वा वा, त्वका न्नात्त गतिमम ॥ मन्त्र हीन क्रिया हीन, उक्ता हीन श्रयत्तु ॥ न्नात्त मात्त न्नात्त हीन, कृती न
 त्त्वमयातवा न्नात्त वक्ता हीन च, तत्पूजयमन्त्र वन ॥ मन्त्र तत्त्व सनभात, पवित्रपापनाशन ॥ त्वया पवित्रितं सव, नृगत्त्वा वन

२३

कृमम ॥ त्वत्तु तयनयाच व, वृत्तवैकल्पयागत ॥ उक्तीरुवृत्तत्त्वच, तवाक्ता मन्त्रगुम्भित ॥ न्नात्त निवद्यदवन्ध, रुक्तात्ता न्निविषाय
 वा ॥ यत्तम्या मन्त्रविष्णु, मन्त्रुर्न वयन्निव ॥ उक्ता न्नात्त मन्त्रात्ता मा, मात्तमात्ता मन्त्रववा ॥ सवार्तं यत्त न्नात्त वा, यत्तमका रुमववा
 गुत्तुर्न वायात्ता विष्ट, गृहीत्वा नियमनथा ॥ यत्तमन्त्र मयत्तु म, गत्ता कृत्ता न्निर्कवृत्ती ॥ पावकत्तु निवम्यव, पवित्रात्तं वृत्त य ॥
 मात्तात्ता मन्त्रमन्त्र, यत्तमन्त्र यात्ता गतिरि ॥ न्नात्त वलिम्यविष्ट, न्नात्त दत्ता निवदयत्ता ॥ यत्तमन्त्र ॥ निवदुत्ता, सवत्तमन्त्र
 मात्त ॥ पापविष्ट कर्तृत्ता म, कृत्तात्ता वयायत्ता मन्त्र ॥ यत्तमन्त्र कर्तृत्ता, वरिष्ट विष्ट कर्तृत्ता मन्त्रात्ता गतिरि ॥ कृत्ता, न्नात्त निव
 तयातत्ता ॥ न्नात्ता दिष्ट तात्ता, न्नात्ता तीना वृत्त य ॥ दत्ता तीना वृत्त यत्ता, सवविष्ट वरिष्ट वलि ॥ विष्टात्ता यत्ता कर्तृत्ता, त्वत्तमान
 पवित्रक ॥ ॐ हं न्नात्त स्वाहा ॥ ॐ हं न्नात्त स्वाहा ॥ ॐ हं न्नात्त स्वाहा ॥ ॐ हं न्नात्त स्वाहा ॥ ॐ ति व्वात्ता गत्य ॥ ॐ हं न्नात्त स्वाहा ॥ ॐ
 हं मात्ता यत्ता ॥ ॐ हं न्नात्त मात्ता स्वाहा ॥ ॐ न्नात्त यत्ता वरिष्ट कर्तृत्ता स्वाहा ॥ ॐ त्वात्ता निवृत्त यत्ता ॥ गुत्तु निवात्ता वरिष्ट, वरिष्ट विष्ट वि

नक्रुननरावजुगु॥ यदिदूततदानीय, समूलमृदिकादि, तंशापुननावायमृत्पुर्ण, पातसंमिद्यवापिता॥ गृहप्यामरुनकृया, यद्वो
 कविधिनायुवधशा॥ सायाकसमयप्राम, वेदध्यादधिवापनी॥ लाहपथागवकृनि, कृतज्ञानादिसक्रिया॥ यथाविधिप्रमयच, सूर्य
 सकलपावका॥ पत्थिमदवदवस्य, तस्यमूलमृतायुता॥ मथाजातनमरुता, ददीतददयनवा॥ वापनानिनमावापि, नालकापीउ
 आगुलादक्रिहासुसपगुश्च, निखयापृथितथवा॥ यसावावर्मतायाद्या, संयुस्यचकधवनी॥ रुतमूलेनगयत्या, उभयांग २३
 धयेमेती॥ पश्चादमक्रलोहत्वा, धानयुध्याकृतावित॥ विह्रापयगुगनार्थ, दमनात्राहर्नयुति॥ नामक्रितासिदवला, पातकाः
 लमयापुशा॥ कर्कव्यनुयथालाह, पृथपचैतवाकृया॥ नृतिविह्रापयदवस्य, मरुककसमाक्रलि॥ संयाजमूलमरुता, विदधात
 रुपादिक॥ लमयातविनिक्रिय, दितीथनपिधायनी॥ पविगकविधनन, कवचनानुगुल्यगु॥ उवसुनक्रितकृत्वा, निवायविनि
 वदया॥ रुविह्रादनुकुश्रीत, यदिवायचनाननशा॥ निवायजा, नाकृया, ध्यानगभनकयादिकृ॥ सागस्तात्वागगनार्थ, पश्ययुग्म

विमक्रयत॥ निखनेमिहिकीचव, कृत्वापूजावि, लामतशा॥ मदनंयूजयदव, पश्चादमविखिश्चता॥ लाममक्रलिमायाय, दृष्टोसंभारुता
 द्विती॥ पविगकविधननेधायनरिमूर्खदव, पश्चावर्कसदातिव॥ लासविद्यानिवक्रुने, मूलाधनिधनाने॥ पविगकविधनन
 कमयनिवमर्चयता॥ उंकोलासतत्वध्वनायनिवायनमशा॥ उंकोविद्यातत्वध्वनायनिवायनमशा॥ नृथवउ॥ धोक्रलिमरुध॥ उंकोम॥ क्र
 ग्वनाथनमशा॥ खपूत्रयपूत्रयनृ, लयानयनमशा॥ प्रलम्पनिवमरुच्य, पावकश्चविधनविता॥ विह्रापयक्रिवरुक्ता, वांस्क्रिताथरुलय
 द॥ रुगवन्नतिनिकंवायनयाकृती॥ सर्वेकुरुमुसमृक्, पचैदामनकममशा॥ उवधामविधिकृत्वा, कृत्वागुनूयूजनी॥ पतितामक
 नयम्भ, द्विजादीनपितपयता॥ वक्रवात्रीगृहकावा, यन्मक्रुनृगविधि॥ जपयूजादिकंरस्य, मरुतश्चनमासगी॥ पनापकान
 नीतन, लीमताक्षामसीकुना॥ क्रियाकाकुक्रमावत्या, धामयूजाविधिकृता॥ ॥४॥ ॥ स्वकीयावापनृपेणमानवायात्यधायनात
 स्यादिधीषयाकिश्च, पायम्विकुवदकृता॥ लखनसुनूजदह, नाजवीनरुयादिमू॥ गुनूदवाग्निकार्येव, निखरानिनधागदता॥ गृ

रुक्मावन्मवावीव, पायन्विकिदिक्षारुवत्॥ सकामाकामरुदन, गावविविविधसुता॥ लूकामाकामसकामस्य, द्विगुल्लुद्धिमादिता॥
 शानिकाद्विगुल्लुद्धि, पायन्विकि रुनेक्षिक॥ नालीतिम्यप्रवर्षाणि, वालावायु नूधामेते॥ पायन्विकिद्विमर्दिनि, क्षिप्रावाद्याधिपी
 तिता॥ तगापिचयनिकर्ण, क्वात्वाद्वाद्वाप्रकल्पयत्॥ स्तनम्वयं, कुरुमकृमाद्विगुल्लुद्धिगता॥ दलकालवयः॥ गकिं, जाति
 लकिं क्रियाक्रम॥ सुविवाय्यम्येवंशीलेयदानव्या, नापवासेनूजाचिते॥ पायन्विकि समर्थम्, पितृजातादिवाश्वेवागदिरुं क्व वि 26
 धागव्या, द्विगुल्लुद्धिपनेजने॥ यथाग्रतयथादृष्टं, निवर्द्धगुनुरियथा॥ स्वसिद्धाकाविनाधन, तद्विलद्याविन॥ नाशोयूजाश्च
 दानश्च, वरुक्रुपनिवर्द्धयत्॥ विनाचन्द्रापनागन, विनासिद्धि समीरुके॥ पूरुयित्वाप्रमादन, गायय्यल्लगतेजयत्॥ समूका
 सव्येनामव्या, निवयूजानवाच्येन॥ सद्यसम्भवितापठ, लूकामस्यसर्गजयत्॥ एकाकाललापायिगुल्ल, भापवापनुकामता॥ ए
 ककालाच्च नल्लय, सद्यप्रदकिं लजयत्॥ लूकामतमुपूद्योक्तं लकलं जयत्॥ एककालद्विकालम्वा, एकात्ममद्वनात्रिकी॥ उ

पवाससमायतं कमलोपकृतमिति॥ एकाकालयूजनयथा, मककालमथापिवा॥ पायन्विकि समन्वयं नन्यः ननाधिकं रुवत्॥ द्वितीयदि
 नमातस्य, वरुत्रयमरुप्रक॥ एकाकालकनयावृद्धा, वद्वयप्रतिवापन॥ विलापयकृपूजाया, जयध्यानायुगद्वयं॥ ययूतान्नयया वृ
 द्धा, मासमाससमावधि॥ स्वमूलिनापनिरुद्धं दग्धरुतापिवा॥ नीतवामृषिकागायिकाककोलयवानले॥ एककालक्रमयानस्य, विधि
 मालिसकान्नात्र॥ प्रतिष्ठाश्वरुवृद्धं, पितृकायान्नाधवत्॥ सद्यप्रालोतिलिम्, द्विगुल्लुद्धिनिवर्द्धन॥ सद्यश्चरुवृत्तलक्षातिव
 दुनिधितयूताना॥ गुरुकायसिद्धातं रु, सद्यश्चरुवृत्तलक्षातिव॥ लूकामस्यपूनेनव, लयूद्यातविगुल्लुद्धि॥ शाश्वतयतिनसिद्ध, गालता
 लतालेयूतेजयत्॥ द्विगुल्लुद्धिनिनाधन, कल्पन्यनाधिकत॥ लूकामतायकालिङ्ग, व्यत्यपात मानत॥ विमिर्क्यवरावनपाय
 न्विकि तदानदि॥ लूकामाश्वयं सताकाया, रुदपापमरुक्रम॥ जायततनकद्व्या, नप्रमादागुकरुद्वितालप्याना यनास्ति, महापाप
 विनामन॥ त्रिगुल्लुद्धिपनेजने, मदायापमरुक्रम॥ कामतमुपदालिङ्ग, विमीर्क्ययतिनारुवत्॥ पायन्विकि नन्यः ननाधिकं रुवत्॥ द्वितीयदि

दावय॥ लिङ्गपादनसंस्पृश, लघितवायुगर्भय। पादलग्ननरुः॥ पृष्ठ, त्वधानस्यायुर्गर्भयत॥ ॥ अथनायकगलिने, यदिवा॥ ॥
 अवाप्तिना॥ नृयुर्गर्भयुर्गर्भयाम्, कमलपत्रिवर्कयत॥ मृगदकनसंस्पृश जपत्तासीयुगद्वय॥ नरुमृगनरुः॥ पृष्ठ, दृष्टितयु
 गपञ्चक॥ तत्संयुक्तादकमपगो लादहीनरुपदिदा। लरुनु विष्टयापृष्ठपादहीनरुदरुसा॥ गद्वनिमोत्यगकपिपतनात्तदि
 मादि॥ ॥ विघोपकंतिपातयु, लरुमद्विर्कयत॥ निवर्तमानहीनरु, स्पृष्टलिङ्गदिगानि॥ क्रमाङ्कपदघोपस्यवृद्ध २१
 वृद्धकाकनयागर्भ। स्पृष्टदगसंरुप्राति, रुक्मवर्ककादिदि॥ पृष्ठकादिवाग्नेन, पूजयदयुगर्भय। लधानस्यायुर्गर्भय। ॥ वि
 हारयमवादिदि। पृष्ठदुद्धिगु, लोपनि॥ निवर्तमानविष्टुद्यति। वामदक्षिणमार्गम्॥ पृष्ठलिङ्गयुर्गर्भयत॥ संरुनुस्त्रिमृन्
 ल, क्कापयञ्चतदवदि। अमिर्तदग्धविष्टाय, सविर्तस्त्रयवादिदि॥ पतिर्तथापगर्भकादी, दूर्तनाजादिदि॥ पतिरुज्जक
 दातिङ्ग, ऊर्ध्वाधानदगर्भयुर्गर्भय। लिङ्गकनसंतिष्ठाय, विष्टुद्विमदिगच्छति। निर्वो, लसनिववको, लनागसमूपाप्तिर्गर्भयदगः

मरुप्राति, कामलायुनिव्यवत॥ निर्वो, ललकिर्ततस्मिन्नकलागमूपाप्तिग॥ मरुप्रवद्वृपस्य, जपद्वाधायनरुय॥ संश्रुययपत्रि
 ४॥ निवकादहीकागर्भय॥ ऊर्ध्वाविष्टुद्विमात्राति, स्नानहीनरुगर्भयत॥ तर्जन्यपूजितदव, गुग्गुवाग्नेवरुकिर्त॥ नृदत्ताववर्तिततः
 निवस्यासृगर्भयत॥ वतस्यवक्रियाया, नियमम्यवतापन॥ गययष्टग, सासाग, विष्टुद्विमधिगच्छति। वितायनिव्यपूजाया,
 ल्यदुद्धादिपर्वसु, निदिष्टदवदवन, पायविर्कवदुगुली। नृसायदिगुयवा, आययवीतकी, लधो, रुद्धयमधा, नस्यज्ज्वा
 चन्दायनरुयत॥ ममाविमजितपाग, रुग्णवापिचिवकिर्त॥ गतद्वयोमरुप्रात्र, गद्वयवुवि॥ क्रमा॥ नृरुमृगपना, धन, पुद्धिलिङ्ग
 रुपादग॥ संख्यातधवि, ग्राह्य॥ पनामध्वन॥ मृगक, कुनवकिर्त, मरुप्रयनिवर्कयत॥ गतदुक्कीर्क, कसूग, रुद्ध॥
 रुथागर्भय॥ नृक्रमात्ताकनामुष्टा, कालयज्ञध्वानि॥ गययामरुज्जकन, सर्वतेशविधि॥ मृग॥ यत्नया, धनु, लिङ्गका
 मृमरागत॥ पायविर्कविष्टागर्भय, दुरुमागमवदिना॥ पूजायकनर्क, विष्टु॥ स्पृष्टापी, ०दिकीयदा॥ गतद्वयमधा, नस्य, कामगत्त्व

मूर्तं यथा ॥ वाला कलानां वृद्धानां मातुनामश्च पादगण ॥ प्रायश्चित्तं पुनरागत्य यदि रुका गदा निवा निवेका हित विकाना मावाप्या स
 वेदा ॥ लोके मय्यवका नार्थं प्रायश्चित्तं पुनरीति ॥ कलमीषास्त्रिकीटादि दूष्टं न वयं दलनि ॥ लघानस्यायुर्गकामा दकामानुगतं य
 गा ॥ निश्चयेन वयमानस्य ॥ काशधातुगतं दय ॥ प्रायश्चित्तं पुनरागत्य पंचमस्य गतं यथा ॥ पातना कामग ॥ लघा गुनूदवनिवागम ॥ द्य
 र्गनं ध्यानमस्तस्य कामग ॥ लघुत्वं यथा मरुगगुनूवदुक्ता रं ललकमुदीनिर्ग ॥ उगदर्थं धितद्वय रुकलत्यादवकिंता ॥ निर्माल्य २८
 कालध्यानं न कृपादनं पुद्गागिरुका ॥ धनममर्दानं स्यादददं मूयकदी ॥ लघुवारुका ॥ लकामाग ॥ उगदधुर्गं मपचर्क ॥ यावत्सकप्रम
 ध्रुक् कामगदिकया पुवि ॥ निर्माल्यं लययित्वा उ दकिं लम्यायुर्गयथा ॥ लघननममस्यं चैम्ये ॥ समारुका ॥ विक्रियो ॥ दवस्वदव
 तादयं न वयश्च निवयर्क ॥ उपश्च निर्माल्यं सवि विधं स्मृतं ॥ ग्रामादीनाम्यदवस्व दवद्वयपटा कैदि ॥ न वयं कल्पीतं तस्मै
 दवाक्किं न निवयर्क ॥ वल्लु दयं लुगद्वर्क निर्माल्यप्रकि वंरु ॥ पिष्टिका ॥ न निर्माल्य मपि यथ विप्रकिंता ॥ कथायाजायतना

ना गमाग ॥ मस्त्वमरुका ॥ लघनमिद्विद्वानिश्च गन्धयादानतावृक ॥ वधुलस्त्वयथा दारु विक्रयं सवनारुवरा ॥ सगं न जायगमि
 य ॥ क निर्माल्यं नमर्गय ॥ य निर्माल्यं नमर्गय ॥ गदुजायु नूयववा ॥ पादानं गगुयुर्वाकं स्यर्गलं यरुका ॥ लघु नू सद्गुविर्कय ॥ अ
 न्दनादिप्रभदग ॥ गान् निर्माल्यं वरुधर्ग ॥ मिद्वलिमदिनामसा गुनूयुर्कनागना वक्रियागिगलम्यवा ॥ पावर्गीयकामा ॥ न निर्माल्य
 निवयथा ॥ नलमास्त्रिलि ॥ मयवतविगपदकि ॥ लघु नू यपिन निर्माल्य ॥ व्याख्या मूय मूयायूजायामनधूपादि गन्धदीपप्रतापिच
 न निर्माल्यिपुकारु निर्माल्य नदलान्दिकदावन ॥ मय ॥ प्रतिष्ठितलि ॥ मयवतवायदिवाचला ॥ उथो कर्मयथार्क निर्मालादिनदयः
 ति ॥ यर्गयुर्कलगाय मनपानादिमोमर्ध ॥ ल निवयनं उश्च ॥ यदा कानाय कल्पिता ॥ ल निवयय उश्च ॥ पत्थिरीरुवनन ॥
 निवाकृगगजधन यूजायाव विष्टुद्यति ॥ दवगानां पुतिष्ठा म गगाना मयचम ॥ उक्तायश्च गताजन्ता पश्च मस्य विष्टुद्यति ॥ य ॥
 वा ॥ य उथो ॥ उक्तावामगगं यथा ॥ द्वादशाकादलक्ष ॥ दकिं लम्यायुर्गय ॥ गगानं गनिकानश्च सन्यक्तानां कथेववा उक्ता

नृशङ्कानश्च वर्गवन्दायनवनगापाकादियरु। गमकान्, शोभादाहवर्गमवातथासावानवर्गना, उक्तानान्ननदभ्यति॥ यान्ननाम
 गिराशुक्ल, यम्यवर्ग, मदीकित॥ गङ्गातीमृषजानीमा, जयकगुविगुद्यति। एकोद्वीतगुयः। एव, दिवगाप्रमृगुद्यय। कगुवि
 दृष्टजानीनां जयम्या नकमनड। स्तान्नपृजाजयोक्षाम, मजील्ले पत्रिवर्जयता। गील्ले स्नात्वागर्गमर्ष, मययापनिकीकयता। दिकित
 नमवर्गेन, समन्विष्टनदीकित॥ उच्चिष्टमृष्टनावम्य, स्वजातीगर्गजयता॥ तस्मिन्नदीकितमृष्ट, स्नात्वावम्यगतद्वय। सामीप्य
 दीकितगतद्व, दयवासाप्यदीकित। वंध्यमृष्टादिकृष्टमृष्टा, समृपाप्यद्वयद्वयता॥ गङ्गातीमम्वजीतीमा, वकीकयजयकमाता॥ क
 गियः॥ मृष्टसम्यक्, शङ्कयदिनूपाधित॥ एतानदीकितगत्तुक्षा, पृथ्वीकद्विगुलवनगापादहीनरुवडागा, वंध्यमृष्टनविवर्जिता। पा
 दगुयजितमृष्टा, द्विजमृष्टनदवदि। मृष्टमुक्तगियम्या, कृताकोद्वेमेनेभ्यति। नन्यगाम्यवमालाया, पायव्यर्कवद्वयधशास्वर्ज
 तीसाश्वगङ्गा, दिनगुयमृपाधितान् नन्यर्कनसदम्या, विगुडाजायतननगागतलेवधुलस्यैक, दकितम्यायगगयीजस्वाद्यक

२२

मनूखाय, मुक्तागीसकलमल॥ पुनूभाया, वामागा, जानीमावाक्यदिश॥ साधन। एतमृष्टपातमु, गीमसाधन। यन॥ उय
 वामपृक्कीते, स्वकित्युच्चिष्टरुक्। ए। सामीप्याच्चिष्टरुक्। जयदपिसरुप्रकी। उक्तावन्ध्यमृष्टमृष्ट, समन्विष्टद्वयद्वयद्व॥ क
 मा। एवमविप्र, रुथापानागयर्गजयता। द्विषापिमृगकउक्ता, समृपाप्यविगुद्यति। वामम्यवसद्वयका। उद्विगुलवनगा
 उक्तागुलवेकीयेरु, सरुप्रदकितजयता। उपवासमसापत, कामातुगुलिनगिरि॥ कानूदासीनपदासी, मृगकनेवविद्यता॥
 निर्वीषादिकितानानु, पृथग्भक्ते। उजानततामस्यकनर्कगद्वीरुक्तानसकपद्वी। पित्तानवाधुनायास्य, पञ्चगव्यनगुद्यति॥
 पीत। मनुयकाय, प्रमादाद्यदितत्यिवता। उधाम्यनजीमका, पञ्चगव्यपिवदपि। पीयमानपतताय, दृष्टमन्नमदनन। सरु
 पुनूपिषाजस्वा, पञ्चगव्यनगुद्यति। कमुनगुददियगव, मवस्ताननूथद्विषा॥ न्वाभमावनकातसरुप्रश्नजयद्वयक।

नूनावान्पिबन्त्यं, रुक्मयदधमुपयत् ॥ रुक्मधातं निनाहानं यश्च गन्धनमुच्यते ॥ विनायकापवीतनं, पिबन्तुः श्रीतवाक
 दि ॥ रुक्मधातं निनाहानं यश्च गन्धपिबन्तुः ॥ सकृन्मृत्तुसन्धेयं, वनसः ॥ दुद्विकापता ॥ नूनावनमन्तुः रुक्मया, यावद्विरु
 यसीदति ॥ नूदन्त्यहनिनाधीतं, विविधं ॥ निवसं हिता ॥ रुसक्तिमन्त्रेयायाति, तामिष्टमिवरास्कन ॥ उयवासद्वमं रुक्मया
 प्रायविक्रयुतयुता ॥ हामदभंगतादद्यात्, विनातिगुरुकांजपात् ॥ रुक्मयाविक्रवातीच, वितलः ॥ मन्त्रवाग्वनानकं रुवि
 धुग्याव, त्यायविक्रममायत ॥ मन्त्रयुक्तोयुदीच्यत, न्यसन्काष्ठकपश्चक ॥ निवसकातिर्विद्या, कालश्च मन्त्रमक्रमा
 ता ॥ सुप्रतिष्ठं सुसाकं च, तन्मावदमृतात्मकं ॥ यत्नादपश्चपश्चात्, तस्याताचविनापयत् ॥ मन्त्रमयं ॥ मन्त्रलं सविदधिक्रीः
 नश्च यश्च मं ॥ प्रतिव्यामं रुक्मयाभा ॥ पूर्वमन्त्रकिपन्तुमात् ॥ सुधाजातनवाभन नृपितयं नृपनच ॥ २० ॥ सननियथासंख्या ॥

मयायतिमन्त्रयत् ॥ पूर्वपूर्वकिपन्तुमात् ॥ मूलमन्त्रमदीनयत् ॥ कृष्णदकं रुक्मयया, तन्मसंहितयाथवा ॥ यश्च गन्धमिति प्राकं, मन्त्रयात
 कनागनं ॥ मन्त्रमयं दमन्तुः, मन्त्रमुत्तमं पितु ॥ यत्तद्वयं मन्त्रमार्कं, मानद्वयपतपयं ॥ यत्नानि यश्च दग्धस्य, कृष्णमयतमा
 रुक्मं ॥ रुक्मया ॥ मन्त्रमयं मूर्तं, नीलायामेकपिलाद्युतं ॥ पुनरुदधिगुलाया, सागुथाकां नमादयत् ॥ नूनामपद्ववलीनां, कपिलकाः
 प्रकीर्तिका ॥ स्वर्णकपधनागना, पाण्डुतामस्यवागुरु ॥ यश्च गन्धविधानं, निवकृष्णमिदं मृत्तु ॥ मूलमन्त्रमन्त्रात्तद्वं, पिबन्तुः क
 रुथाजितं ॥ संध्यातमिगन्धतस्य, ससिद्धं ॥ वयावका ॥ निवकृष्णमिदं मृत्तु ॥ यथागन्धपिबन्तुः, प्रायविक्र
 रुक्मयदधान्यानां, विक्रयदानं, दलिकाननकं वज्रत ॥ ॥ क्रियाकालुक्रमावल्या, श्रीमतांशमन्त्रमन्त्रां ॥ मन्त्रप्र
 तावन्त्यपि, प्रायविक्रविधिस्त ॥ ॥ नूनागन्धमन्त्रात्, दीक्षा नृपनिनृपनं ॥ यथागन्धमन्त्रादिधि, संक्रयाद्विधीय

त॥ मलमायादियागनी वि॥ तत्र॥ क्रियतयथा॥ कानवृत्तन्यतनिष्ठ्य साधीक्रियरिधीयत॥ विज्ञानाकननाभको द्वितीय॥ यत्त
 याकल॥ गृहीय॥ सकन॥ मस्तु नृमया क्रि विध विधि॥ तयाग्रामलमागुन पुका न्या मलकर्म रि॥ कलादिमूर्तिपर्यन्त
 तन्वस्तु सकलायुन॥ निनाधनाथसाधना दीक्षाधिविविधमता॥ निनाधनाथसाधना साधनसकलास्पष्ट॥ तस्यवर्ग निनायः
 पक्र॥ तक्रियतर्गनुनवया॥ तीव्रगतिनिघातन निनाधनात सास्त्रगा॥ न्नावायमूर्तिमास्त्राय मंदतीव्रादिरुदया॥ लकार्य
 कनृगर्गनु लास्यधिकन॥ तन्यत॥ रयवदुर्विधप्रका सवीजावीजवर्जिता साधकानातिषिकाना यथातदरिधायन
 ॥ समयावापसंयुक्ता सवीजागायतनृभा निदीजात समर्थना समयाववर्जिता॥ निर्यनमिषिककाम्प यत॥ स्यादधिका
 निता॥ साधिकानारुवदीका साधकाविययानग॥ निदीजातुक्तिर्गानां तुगथसमपि कृ ग्या॥ निर्यमागाधिका निर्या दी

३१

तुन

निनधिका निर्या॥ द्विविधयविनूयापि पुन्यकमप्यजायत॥ एकाक्रियावतीतग कंठुमस्तुल्यवृद्धिका॥ मनावायातलमागुत यासाक्षा
 नवगामिता॥ कलधधिकात्रल दीक्षावायनसाधन॥ सर्ववसद्वसंशरु त॥ समुक्ति॥ तुगतीतवाना कानावातगु॥ तथगत॥ कः
 मागुद्वागथावला॥ दलगीतगुलवान गुनुरुक्ति समन्वित॥ निवानुधनवानगीधा विनकागुलस्यत॥ नूधदीकागुनूक्योत
 कागानिर्यक्रियाद्वया॥ एतवायकनाशक कगदानाधियावन॥ विद्यानस्त्यायेददत्या न्नास्त्वव्यागानिस्तिग॥ कृत्वातकृत
 संगुद्धि मन्त्रार्गयाधदिता॥ तिलतामिदार्थ कृणद्वीकनादनसयवकीननीनव वि॥ शायार्थमिमकृत॥ मदवृनाड
 अगुद्धि नीलकलमनात्मना॥ पूजनमन्त्रसंगुद्धि पञ्चगव्यनपूजवत॥ यागावदनमिदार्थ रुसद्वीकगकृणानाविकना
 गुद्धिनागा॥ सफधास्त्रासिमक्तिगाना नूकावृमाक्रितानगा कवचनावगुक्तिगाना॥ नानाप्रदुनलका ना विद्यायविनिवातका
 न॥ दशानांतालमानन कृतामद्विगमादल॥ सफकृता निवाकृता वशीवाधसिमृकमा॥ निवमानरिधिन्यस्य सक्ताधन्य न

मरीप्तेत। निष्कृष्टं निवन्मस्य निवारमिति रावयथा॥ मूलानिमित्तं ध्वनः मूक्यर्थे निवन्मस्य सगु॥ नृलं कथयति कथं गन्धर्व
 श्रुतिरुच्यते॥ गी॥ धर्मो लुप्तकं प्रीय विधेयं दक्षिणं कृत्वा॥ विधिना वाच्यं यदीह मिच्छाम्यस्मिन्नरुमेकं॥ तन्यस्य। तव मने रा
 खानन्निजमस्य क॥ निवारद्विन्नमात्मानं कलानरावयथा॥ मधुलकमम। साक्री कलिभयकृत् न कृत्वा॥ कामाधिकान्तं वक्रो निव्यः
 पाणविभावक॥ स्वात्मनः प्रहरीतमं यथाधनाय णीवन्॥ शारुमवगिच्छीत रावस्मिन्नतमनु॥ क्लान्तवद्वनमस्मिन्वा नक्रान्या ३२
 दूदगमनन॥ लघोवपश्च गव्यायां सत्याक्रमवमधुयः॥ चतुःपथान्कसंस्कारं सङ्कथ्यादीकृत्वा दिशि॥ विक्रियविक्रयं स्तुतुं कृत्वा
 कथो यमरुत्त॥ तानीह दिनिगो वदन्त्या न्नासनयापकल्पयता॥ नेमनवास्तु गीच्छीत दातुलक्कीवधुजयता॥ पन्विमसंमुखीवत्त॥ मू
 लयनामखातय॥ आत्मावाक् ददायद्यो स्मनस्तु यन्पिती॥ लघुनत्तायधीताय पूज्यं वन्दनवर्चितं॥ नृगयस्तव वक्रव प्रहवन्नव
 लावेनं नान॥ नृगयसिद्धे धन्यस्मि कलभयपत्त्रिमानन॥ रुचितं वक्रुमाधो॥ मार्गसंयुज्यच्चिवा कुरुदक्षिणयावत्स्मा पन्वि

मास्मासलकृत्वा॥ यजुदक्षु नमि रक्षा वदनीयवम नृपिती॥ दिक्कृत्वा कादिदिग्याता विष्कृत्वा स्वतवा सनात॥ वारुनाम धर्मयुक्ता द
 दावैरुच्यं स्वनामहि॥ पथमं नृसमादाय कुरुध्याना नृगमिनी॥ नृविच्छिन्नयथाश्वात्तु मयगां यदक्षिणी॥ निवारुलाकयाता
 नी॥ भवन्मूलसमञ्जनता॥ सनगयथायागं कुरुधृत्वा धर्माधनता॥ गतस्मिन्नासनं कुरु सास्युक्तं कनविन्यसता॥ तन्धमधो
 निवर्द्धन्या वास्तुमन्त्रयता॥ उं रुद्रासनाय दूरुद्र नमः॥ उं उं नृकुम्भमृत्तया॥ दूरुद्र नमः॥ उं श्रीपञ्चकूरुद्र नृक्राय नमः॥ उं
 उं रुद्राय दूरुद्र नमः॥ उं श्रीनिर्मलदूरुद्र नमः॥ उं घनिखाय दूरुद्र नमः॥ उं नृक्षयकवचाय दूरुद्र नमः॥ उं दूरुद्र पाण्डुयगा
 य दूरुद्र नमः॥ सूर्योकादिपतीकां पुनयावदक्षुत्वा प्रकृता॥ गतस्त्वव उवर्द्धं वक्रु उर्द्धं॥ पदीकृदगनिप्रार्थितं दीप्युत्तमा
 प्र मूदुर्द्धं॥ गकिमुन्ननृतासि रुद्रवज्राद्धं गवत्त॥ रुगलिगसमायागं विदध्यालिममृदया॥ नृमुद्रनस्य गन्तुं रुद्र ददा
 मूदुर्द्धं उवर्द्धनी॥ उकायमृकत्वादी मूदिना वदनीत्येता॥ कुरुस्य सनव नकाथे क्लान्तवत्ता समपिता॥ गतस्त्वमूलमनुमय

लतं कुरु निवदयत ॥ तद्वत् ॥ लतवद्व्या, नका विष्ठापयत ॥ यथदक गयत्न, रगवन्मखमदिना ॥ नका मयं गगनाथ, सचा
 ध्वननिवनेवनखयो ॥ पलवस्तं वरुचोद, वायथा विष्ठापयत ॥ संप्रकय गयत्न, गयत्न गममुता ॥ सुलुल गमविष्ठापय
 सा विधिना गन ॥ लक्ष्मकुरु वरुचोद, कुरु गम गयत्न ॥ निविष्ठा विधिना गमिन् ॥ यमिधद्युतादिकी ॥ वामसचु विष्ठापय
 दरो गिलादिकी ॥ कुरु वरुचोद सगमकादि, प्राग्धनसुखरावय ॥ मूनवता मूद्वकस्य, ददिवदि निवयत्न ॥ सुमूक निवकस्य, सुलु
 लनिनिनिष्ठाया ॥ सुद्विन्वायनस्य, साध्याधनयधविधि ॥ वकासमनिजिज्ञाना, कालानाथ निवृपन ॥ दृष्टं कामविष्ठापय, प्रसमा
 दक्षिधीयत ॥ कुरु मानिमुखध्यात्वा, ददाद्विहिनादिपत ॥ यन्विमनिष्ठासंस्कारं, निवृत्ता मासमाचनत ॥ वस्याकर्मसमायाय प्र
 विष्ठापयिनाह ॥ लक्ष्मिकयामसंसाव, वामरुमः पुनस्पत ॥ गुतिकां कनिष्ठ, लयादलयजिगीषया ॥ निष्ठासंजननायव, प्राचीन
 वदयत्न ॥ मानासाचाटनधम, सुमनार्थ सुदक्षि ॥ लक्ष्मिप्रायन्यकं सुगुणव, यवमं सुविष्ठापय ॥ दिनध्याकमलकाय, काकस्य

दनुरुप्रसा ॥ जिज्ञाप्ननतिविष्ठापय, वरुचोद सगमकादि ॥ नूद्वकस्य मासाद वरुचोद निवयत्न ॥ दिनध्याया ॥ समुदिष्टा, वसना ॥ मदन
 कुमात ॥ मध्यागावद्विष्ठापय, दक्षि ॥ लक्ष्मिकयामसंसाव, वामरुमः पुनस्पत ॥ गुतिकां कनिष्ठ, लयादलयजिगीषया ॥ निष्ठासंजननायव, प्राचीन
 वदयत्न ॥ मानासाचाटनधम, सुमनार्थ सुदक्षि ॥ लक्ष्मिप्रायन्यकं सुगुणव, यवमं सुविष्ठापय ॥ दिनध्याकमलकाय, काकस्य
 दनुरुप्रसा ॥ जिज्ञाप्ननतिविष्ठापय, वरुचोद सगमकादि ॥ नूद्वकस्य मासाद वरुचोद निवयत्न ॥ दिनध्याया ॥ समुदिष्टा, वसना ॥ मदन
 कुमात ॥ मध्यागावद्विष्ठापय, दक्षि ॥ लक्ष्मिकयामसंसाव, वामरुमः पुनस्पत ॥ गुतिकां कनिष्ठ, लयादलयजिगीषया ॥ निष्ठासंजननायव, प्राचीन
 वदयत्न ॥ मानासाचाटनधम, सुमनार्थ सुदक्षि ॥ लक्ष्मिप्रायन्यकं सुगुणव, यवमं सुविष्ठापय ॥ दिनध्याकमलकाय, काकस्य

यकिनीसिद्धतिरुत। वधूनिष्ठुकादीनि वधूकर्मपदामय॥ विल्लाभाकापनकार्थं पाटलीखंयकान्यपि। पद्मानिचक्रवर्हित्व
 रुकताकातिशयपद॥ पूर्वोद्याधिविनाशाय सर्वसत्त्ववशीकृतं। प्रियंयुक्तदलीपूष्या वधूकृतारुह्यादध्याविषमकानविनाश
 य् चतुष्पत्तिलिङ्गमयता। घृतनसर्वसाधानि घृतमित्युक्तितायथा॥ ॥ ॐ नमस्कृत्यकृतनाशाय॥ ॐ नमः॥ वा ॥
 टकलवर्द्धनमयश्च वृत्त्यर्थं ग्रहसंयुता। निनान्वान्नृत्तमनुदासुहृत्तयागहृत्त्येकनवामद्यानाम्नाविता। नमदिगन्तध्वनलीगलीन
 । मालयफिल्लहाभनगी नृपाण्युपगता॥ ॐ श्रीपद्मंरुद्रंम॥ आस्तुत्यशंरुद्रं॥ सर्वोपद्रवनाशाय नृदशान्यानिनाः
 दिशि॥ विधिमायजनकृत्वा दधपुस्तुमूत्रात। नृन्यक्ष्णानननममनिगुदक्ष्णानन॥ संगय्येनमृत्तनदद्यात्पुष्पयथायुना। त
 धप्रवक्ष्याम्यप्रतिलिख्येनमयऊत। नतद्वयंरुद्रमन वसपक्षीदक्षकालिथा॥ दन्त्रिगायसानामृत्तिमिरुक्तयथा। गतद्वयंरु
 द्रमनवसपक्षीदक्षकालिथोमृत्तमनुनपूर्वग॥ मृत्तायकुनमाकुक्ष्ण स्वाहानकस्येनसकृता निरुवाप्तगुटिनेचीऊरुद्रं